विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2566, आषाढ़ पूर्णिमा, 13 जुलाई, 2022, वर्ष 52, अंक 1

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

को नु हासो किमानन्दो, निच्चं पज्जलिते सति।
अन्धकारेन ओनद्धा, पदीपं न गवेसथ॥

—धम्मपदपालि 146, जरावग्गो.

– जहां प्रतिक्षण (सब कुछ) जल ही रहा हो, वहां कैसी हँसी? कैसा आनंद? (कैसा आमोद? कैसा प्रमोद?) ऐ (अविद्यारूपी) अंधकार से घिरे हुए (भोले लोगो!) तुम (ज्ञानरूपी) प्रकाश-प्रदीप की खोज क्यों नहीं करते?

पूज्य गुरुजी द्वारा परिवार को लिखे गये धर्म-पत्र :

पूज्य गुरुजी ने इन धर्म-पत्रों में संबोधन तो परिवार को किया है पर लिखा है सभी साधकों के लाभार्थ। अतः इन्हें यहां शामिल करके मन प्रसन्न हो रहा है। वाराणसी के जिस शिविर में गुरुजी 'धर्मधातु के जागरण' और 'धर्म के पुनरुत्थान' की बात कह रहे हैं उसी वाराणसी के मृगदाय वन में 2500 वर्ष पूर्व आषाढ़ पूर्णिमा के दिन भगवान बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश दिया था, यानी, *धम्मचक्कपवत्तन* किया था। यहीं पर 60 भिक्षुओं का पहला भिक्षुसंघ बना था और यहीं से *'चरथ, भिक्खवे, चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय...'* का उद्घोष हुआ था। अतः द्वितीय बुद्धशासन के समय वहीं से धर्म का पुनरुत्थान होना अपने आप में महत्त्वपूर्ण विषय है। इसीलिए आज आषाढ़ पूर्णिमा के अवसर पर इन पत्रों/लेखों का विशेष महत्त्व है।

– (संपादक)

वाराणसी शिविर : धर्म के पुनरुत्थान का प्रतीक

पड़ाव: बाराचकिया
9 सितंबर, 1970

प्रिय शंकर-सीता, राधे-विमला, गिरधारी-मंजु,

सप्रेम मंगल कामना!

वाराणसी का शिविर लगाकर जो असीम पुण्य अर्जित किया उसमें तुम सबको, पूज्य मां और पिता जी को, तथा परिवार के अन्य सभी सदस्यों को भागीदार बना कर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ है। साधुकार द्वारा पुण्यानुमोदन कर धर्म-लाभी बनो।

इस शिविर की विशेषता यही थी कि यह बनारस जैसे तीर्थ स्थान पर लगा जो कि मिथ्यादृष्टि का गढ़ है, और गंगा नदी के तट पर लगा जहां कि दिन-रात अंधविश्वास का घना अंधकार ही छाया रहता है। प्रज्ञा और ज्ञान का आलोक मिथ्या मान्यताओं के घने बादलों के पीछे छिपा रह जाता है। ऐसे स्थान पर धर्म-धातु का जागरण अपने आप में एक महत्त्व की बात है। मैं इसे धर्म के पुनरुत्थान का प्रतीक ही मानता हूं। डालमिया कोठी के बरामदे में खड़े होकर जब कभी मैं नीचे घाट की सीढ़ियों पर सैकड़ों स्त्री-पुरुषों को भावावेश से अंधभूत होकर गंगा में डुबकियां लगाते हुए देखता तो मेरा मन उनके प्रति करुणा भाव से ही भरता। काश इन्हें धर्म का ज्ञान होता, इनकी प्रज्ञा जागृत होती तो ऐसी मिथ्या मान्यताओं में अपना समय नष्ट नहीं करते और चित्त विशुद्धि के लिए इस नदी के जल का सहारा छोड़ कर कुछ और अभ्यास करते जो कि चित्त से संबंध रखने वाला होता।

लोगों में आज से नहीं हजारों वर्षों से कैसा अंधकार फैला हुआ है कि गंगा के जल में पाप नष्ट करने की ताकत है। किसी जल से शरीर का ऊपरी मैल छूट जाय, यह बात तो समझ में आ सकती है और वह भी तभी छूटे जबकि पानी स्वच्छ हो, साफ हो। यदि नदी का जल गंदला है तो शरीर को साफ करने की बजाय गंदा ही करेगा। परंतु यह मानना तो नितांत पागलपन है कि उस जल में पाप काट देने की शक्ति है। पाप कहां लगे रहते हैं, क्या पाप शरीर पर चिपके रहते हैं, यदि ऐसा होता तो नदी का जल शरीर पर लगे हुए उस पाप को छूता और शायद धो भी देता। परंतु पाप का संबंध तो अपने चित्त से है। सारे पाप-पुण्य चित्त से होते हैं और गंगा का जल उस अभौतिक चित्त को कैसे छू पाए, कैसे उसका पाप धो पाए। परंतु जब आदमी किसी अंध मान्यता के भावावेश में डूबा रहता है तो उसके विवेक की आंखों पर पट्टी बंधी रहती है, उसका ज्ञान और उसकी प्रज्ञा लुप्त रहती

है। वहां कोई तर्क-बुद्धि, न्याय-बुद्धि अथवा धर्मबुद्धि का प्रवेश नहीं हो पाता। कोई बात संगत है अथवा असंगत है, इसका सत्यासत्य विवेचन हो ही नहीं पाता।

सच्चा धर्म हमें हर प्रकार के अंधविश्वास से दूर करता है और हमारी प्रज्ञा जागृत करता है, जिससे कि हम स्याह और सफेदी का फर्क जान सकें, सच और झूठ का अंतर पहचान सकें। जहां सच्चा धर्म है, वहां अंधविश्वास टिक ही नहीं सकता और अंधश्रद्धा ठहर ही नहीं सकती। धर्म मार्ग के लिए श्रद्धा नितांत आवश्यक है, श्रद्धा के बिना मार्ग पर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता। श्रद्धा के बिना साधक लंगड़ा रहता है। श्रद्धा ही साधक के सबल चरण हैं। यदि प्रज्ञा हो, ज्ञान हो परंतु श्रद्धा का नामोनिशान न हो तो साधक की दशा उस यात्री की तरह है जिसकी आंखें तो खुली हैं लेकिन दोनों पांव कटे हुए हैं, इसलिए चल नहीं सकता। परंतु यही श्रद्धा जब अंधश्रद्धा का रूप धारण कर लेती है तब विवेक और ज्ञान समाप्त हो जाते हैं। ऐसा यात्री पांव से चल सकने में तो बहुत सबल व पुष्ट होता है, परंतु आंखों से अंधा होता है, इसलिए सही मार्ग पर चल नहीं पाता। राजपथ छोड़कर किन्हीं अंधी गलियों में भटकने लगता है। इसलिए कल्याण इसी बात में है कि साधक के पास श्रद्धा रूपी टांगे भी हों और साथ-साथ प्रज्ञा और विवेक रूपी आंखें भी। इन दोनों के मेल से ही साधक बिना रास्ता भटके हुए आसानी से राजपथ पर चलता हुआ, शीघ्र ही गंतव्य लक्ष्य पर जा पहुँचता है।

भगवान ने हमारी सफलता के लिए पांच बल बताए हैं—श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञा। इसमें हम देखते हैं कि श्रद्धा आधार शिला है, मानो हमारे कदम हैं, जिन पर साधना का सारा शरीर खड़ा है और प्रज्ञा हमारा मस्तिष्क है, हमारी आंखें हैं जो कि हमारे चरणों को सही रास्ते पर चलने का निर्देश करती है। इन दोनों का संयोग मणि-कांचन (स्वर्ण+रत्न) संयोग है और अत्यंत कल्याणकारी है।

धर्म दान के पुण्य बल के प्रभाव से सद्धर्म के प्रति सब की श्रद्धा बलवती हो और निर्वाण के प्रति प्रज्ञा जागृत हो, यही मंगल कामना है।

साशिष,

स. ना. गोयन्का

चित्त एक जनरेटिंग सेट

पड़ाव: बाराचकिया/बम्बई

दिनांक: 15 सितंबर 1970

प्रिय शंकर-सीता, राधे-विमला, गिरधारी-मंजु,

सप्रेम आशीष!

बाराचकिया के दूसरे शिविर का समापन करते हुए इस महापुण्य में तुम सबके साथ मां और पिताजी सहित परिवार के सभी सदस्यों को भागीदार बनाते हुए मन अत्यंत सुख संतोष से भर उठा था।

भगवान बुद्ध की उस विचरण भूमि में उन अनपढ़ महिलाओं में जो धर्म-प्रज्ञा जागी, उसे देख कर मन में यही लगा कि ये सब के सब किसी पूर्व जन्म में भगवान बुद्ध की इस पावन भूमि पर ही धर्म लाभ प्राप्त कर चुकी हैं। इसीलिए इस द्वितीय शासन में सद्धर्म के संपर्क में आते ही इतनी द्रुत गामिनी प्रगति की हैं तथा सद्धर्म के प्रति असीम श्रद्धा मंडित हुई हैं। यह उनकी अपूर्व पारमी का ही तो लक्षण है।

इस शिविर की सर्वश्रेष्ठ साधिका तो मोहिनी मां थी ही, एक और अच्छी साधिका बेटी नर्मदा के रूप में प्राप्त हुई।

यहां शिविर का धर्म बोध इस प्रकार जागृत हुआ मानो हम सबके भीतर हमारा चित्त एक जनरेटिंग सेट की तरह समाया हुआ है, जो कि प्रतिक्षण कुछ न कुछ अच्छा या बुरा जनरेट करता ही रहता है। इस जनरेटर का हम चाहें तो अच्छा उपयोग भी कर सकते हैं और चाहें तो बुरा भी। अधिकांशतः बुरा ही उपयोग होता है और अच्छा बहुत कम। इस जनरेटर की यह खूबी है कि हमारे भीतर तो अच्छे या बुरे कर्मों को जनरेट करते हुए सुख या दुख की लहरियां पैदा करता ही रहता है, प्रत्युत इस जनरेटर का प्रभाव आसपास के, अड़ोस-पड़ोस के उन सभी लोगों पर भी पड़े बिना नहीं रहता, जिनसे कि हमारा संपर्क होता है। जिस समय हमारा चित्त किसी दूषित वृत्ति को जनरेट कर रहा होता है, उस समय हमारा अपना शरीर ही अवांछनीय कष्टप्रद परमाणुओं के परिपुंज में ही परिवर्तित नहीं हो जाता, बल्कि साथ-साथ जो कोई हमारे समीप होता है, उसके नाम-रूप स्कंध में भी ऐसे ही दूषित परमाणुओं का उत्पादन कर देता है। मसलन जब हम अपने चित्त में काम-वासना की वृत्तियां जनरेट करते हैं तो हमारे शरीर के अणु-अणु दूषित काम-वासना से राग रंजित हो उठते हैं और हमारे समीपवर्ती लोगों के मन पर भी उसी बात का प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार जब हम क्रोध की वृत्तियों को जनरेट करते हैं तो सारा शरीर आग बबूला हो उठता है और इसका असर पड़ोसियों पर भी पड़ता है। जैसे विचार हमारे मन में उत्पन्न होते हैं वैसे पड़ोसी के मन में भी उत्पन्न होने लगते हैं। जो हाल बुरी चित्त वृत्तियों का है, वही हाल अच्छी चित्त वृत्तियों का भी है। जैसे ही हम कुशल चित्त वृत्तियां जनरेट करने लगते हैं, वैसे ही हमारा सारा शरीर सुखद लहरियों से आप्लावित हो उठता है और अड़ोसी-पड़ोसी को भी आप्लावित कर देता है। वैसे ही जैसे सुगंधित इत्र बनाने वाला व्यक्ति स्वयं भी इत्र की सुगंध से गमकता रहता है और पड़ोसी को भी गमकाता रहता है। इसी प्रकार दुर्गंधभरा मैल उत्पन्न करने वाला व्यक्ति स्वयं भी दुर्गंध से पीड़ित रहता है और समीपवर्ती लोगों को भी पीड़ित करने का कारण बनता है। इसी प्रकार मैत्री भाव को जनरेट करने वाला व्यक्ति अपने चारों ओर मैत्री का प्रभाव ही बिखेरता है। औरों में भी मैत्री के भाव ही जागृत करता है और धीरे-धीरे अजातशत्रु की तरह बदल जाता है। इसी प्रकार प्रतिक्षण द्वेष और हिंसा जनरेट करने वाला व्यक्ति न केवल स्वयं हिंसा से परितप्त होता है बल्कि औरों के मन में भी द्वेष वैमनस्य और

प्रतिहिंसा ही जागृत करता है। साधारणतया जब हमारे मन में किसी के प्रति प्यार बढ़ता है तो धीरे-धीरे सामने वाले के मन में भी हमारे प्रति प्यार ही झलकने लगता है। इसी प्रकार जब हमारे मन में किसी के प्रति घृणा, द्वेष या संदेह के भाव जागते हैं तो उसके मन में भी हमारे प्रति ठीक यही भाव जागने लगते हैं। यह साधारण मानव प्रकृति का सामान्य नियम है। परंतु इसके कुछ अपवाद भी होते हैं। दुष्टता की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ व्यक्ति किसी की मैत्री भावना से प्रभावित नहीं हो सकता। जैसे कि बुद्ध जैसे महापुरुष की मैत्री भावना भी देवदत्त को जीवन भर प्रभावित न कर सकी। फिर भी जीवन के अंतिम क्षण में थोड़ा-सा सुधार आया। इसी प्रकार किसी की द्वेष भावना किसी संत पुरुष के हृदय में द्वेष भाव जागृत करने में असमर्थ हो जाती है। परंतु ये अपवाद हैं। सामान्य मनुष्य एक दूसरे की मैत्री व द्वेष से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते।

ऐसी अवस्था में हमें चाहिए कि हम प्रतिक्षण अपने भीतर मैत्री भाव ही जनरेट करना सीखें, जिससे कि हमारा तो मंगल हो ही, बल्कि हमारे साथ और भी अनेकों का मंगल हो। हम भूल चूक कर भी किसी के प्रति द्वेष भाव जनरेट न होने दें। यदि हम द्वेष भाव जनरेट करेंगे तो अपना तो नुकसान करेंगे ही, औरों को भी पथभ्रष्ट करने के दोषी होंगे। हमारे मन का द्वेष भाव निश्चय ही हमारे प्रिय से प्रिय स्वजन को हमारा दुश्मन बना देगा और हमारे ही मन का सच्चा मैत्री भाव हमारे बड़े से बड़े शत्रु को मित्र में परिणत कर देगा। धर्म का यही मंगलकारी प्रभाव है। हमें इसका सर्वाधिक लाभ उठाना चाहिए। यही इस शिविर का धर्म संदेश है।

साशिष,

सत्य नारायण गोयन्का.

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्रीमती आशा सूद, जळगाव

China: 2. Mrs. Li Bin LB2
3. Mr. Zengguang Ma ZGM
4. Miss Hui Liu HL
5. Mr. Xiao Liu XL
6. Ms. Kunrong Pang KRP1
7. Mr. Huijun Sun HJS
8. Ms. Steffi Yan Zhang YZ

Taiwan: 9. Mr. Arthur Chen AC2
10. Ms. Chao Yu Lai CL
11. Mr. Vincent Yu-cheng Pai VP7
12. Mr. Chien Te Wu CTW
13. Mr. Chung-Ming Yang CMY

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्रीमती सविता हे. चौव्हाण, नागपुर
2. श्री धर्मरत्न जे. दामोदर, अकोला
3. श्रीमती अलका ए. शाह, भावनगर (गुज.)

बालशिविर शिक्षक

1. श्रीमती उषा गुप्ता, अलवर
2. Ms Veronika Kovesdi, Hungary, Europe

ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक्स पर उपलब्ध हैं। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि धम्मगिरि के लिए निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें:

https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri

विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए:

https://schedule.vridhamma.org एवं www.dhamma.org

अथवा निम्न लिंक भी देखें--

https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN

विपश्यना पत्रिका संबंधी आवश्यक सूचना

इस जुलाई महीने में विपश्यना पत्रिका का 52वां वर्ष आरंभ हो रहा है। पिछले लगभग दो वर्ष से पत्रिका का प्रकाशन केवल ऑनलाइन ही चल रहा था। अब जुलाई महीने से छपना पुनः प्रारंभ हो रहा है। परंतु पेपर आदि सभी की लागत इतनी बढ़ गयी है कि दोगुने से भी अधिक खर्च आ रहा है। अतः निम्न प्रकार से परिवर्तन किया जा रहा है।

1. पत्रिका अब आठ पृष्ठों की न होकर, मुख्य लेख और आवश्यक सूचनाओं के साथ केवल चार पृष्ठों में छपेगी। हर तीसरे महीने (त्रैमासिक) मुख्य लेख के साथ कार्यक्रम आदि 8 पृष्ठों में छपेंगे।
2. इस प्रकार वर्ष में दो बार भावी शिविर कार्यक्रम छपेंगे और शेष दो अंकों में सामूहिक साधनाएं, एक दिवसीय शिविर एवं प्रकाशन संबंधी अन्य सूचनाएं छपेंगी।
3. कृपया साधक इन्हें अपने पास संभाल कर रखें ताकि साल भर काम आयें और दुबारा किसी से पूछने की आवश्यकता न पड़े। अधिक जानकारी हेतु नीचे लिखी 'ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन' की लिंक्स देखें।
4. पत्रिका का वार्षिक शुल्क रु. 30/- से बढ़ा कर रु. 100/- किया जा रहा है। नये आजीवन सदस्य नहीं बनाये जायेंगे, लेकिन पहले से जो आजीवन सदस्य हैं उनकी पत्रिका जाती रहेगी।
5. ऑनलाइन सभी अंक पूर्ववत उपलब्ध रहेंगे (उपरोक्त क्रमानुसार)।
6. ऑनलाइन शिविरों की बुकिंग जारी रहेगी। इसके लिए पत्रिका के हर अंक में सूचनाएं छप रही हैं। कृपया ध्यान से पढ़ें और उनका उपयोग करें।

विपश्यना विशोधन विन्यास

विपश्यना विशोधन विन्यास (Vipassana Research Institute=**VRI**) एक ऐसी संस्था है जो साधकों के लिए धर्म संबंधी प्रेरणादायक पाठ्य सामग्री लागत मूल्य पर उपलब्ध कराती है। यहां का सारा साहित्य न्यूनतम कीमत पर उपलब्ध है ताकि अधिक से अधिक साधक इसका व्यावहारिक लाभ उठा सकें। विपश्यना साधना संबंधी अमूल्य साहित्य का हिंदी, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद एवं शोध करना है। इसके लिए विद्वानों की आवश्यकता है। शोध कार्य मुंबई के इस पते पर होता है:- **'विपश्यना विशोधन विन्यास'**, परियत्ति भवन, विश्व विपशयना पगोडा परिसर, एस्सेल वर्ल्ड के पास, गोराई गांव, बोरीवली पश्चिम, मुंबई- 400 091, महाराष्ट्र, भारत. फोनः कार्या. +9122 50427560, मो. (Whats App) +91 9619234126.

इसके अतिरिक्त VRI हिंदी, अंग्रेजी एवं मराठी की मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से पूज्य गुरुजी के द्वारा हुए पत्राचार, पुराने ज्ञानवर्धक लेख, दोहे, साक्षात्कार, प्रश्नोत्तर आदि के द्वारा प्रेरणाजनक संस्मरणों को प्रकाशित करती है ताकि साधकों की धर्मपथ पर उत्तरोत्तर प्रगति होती रहे।

इन सब कार्यों को आगे जारी रखने के लिए साधकों का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। भविष्य में अनेक साधकों के लाभार्थ धर्म की वाणी का प्रकाशन अनवरत चलता रहे, इसमें सहयोग के इच्छुक साधक निम्न पते पर संपर्क करें। इस संस्था में दानियों के लिए सरकार से आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35-(1) (iii) के नियमानुसार 100% आयकर की छूट प्राप्त है। साधक इसका लाभ उठा सकते हैं।

दान के लिए बैंक विवरण इस प्रकार है:— विपश्यना विशोधन विन्यास, ऐक्सिस बैंक लि., मालाड (प.)

खाता क्र. 911010004132846; IFSC Code: UTIB0000062

संपर्क- 1. श्री डेरिक पेगाडो - 022-50427512/ 28451204
2. श्री बिपिन मेहता - 022-50427510/ 9920052156
3. ईमेल - audits@globalpagoda.org
4. वेबसाइट- https://www.vridhamma.org/donate-online

विपश्यना पगोडा परिचालनार्थ "सेंचुरीज कॉर्पस फंड"

'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' के दैनिक खर्च को संभालने के लिए पूज्य गुरुजी के निर्देशन में एक 'सेंचुरीज कार्पस फंड' की नींव डाली जा चुकी है। उनके इस महान संकल्प को परिपूर्ण करने के लिए यदि 1,39,000 लोग, प्रत्येक व्यक्ति रु. 9000/- जमा कर दें, तो 125 करोड़ रु. हो जायँगे और उसके मासिक ब्याज से यह खर्च पूरा होने लगेगा। यदि कोई एक साथ पूरी राशि नहीं जमा कर सकें तो किस्तों में भेजें अथवा अपनी सुविधानुसार छोटी-बड़ी कोई भी राशि भेज कर पुण्यलाभी हो सकते हैं।

साधक तथा बिन-साधक सभी दानियों को सहस्राब्दियों तक अपने धर्मदान की पारमी बढ़ाने का यह एक सुखद सुअवसर है। अधिक जानकारी तथा निधि भेजने हेतु

संपर्कः– 1. Mr. Derik Pegado, 9920447110. or
2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156,
A/c. Office: 022-50427512 / 50427510;
Email– audits@globalpagoda.org;
Bank Details: 'Global Vipassana Foundation' (GVF),
Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments,
Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064,
Branch- Malad (W).
Bank A/c No.- 911010032397802;
IFSC No.- UTIB0000062;
Swift code: AXIS-INBB062.
Online Donation- https://www.globalpagoda.org/donate-online

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

(1) **रविवार**- 17 जुलाई, आषाढ़-पूर्णिमा (धम्मचक्कपवत्तन दिवस) तथा
(2) **रविवार** 9 अक्टूबर को शरद-पूर्णिमा तथा पूज्य गोयन्काजी की पुण्यतिथि के रूप में महा शिविरों के आयोजन निर्धारित हैं।

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिन

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं।

कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*। **संपर्क: 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644 (पूर्वाह्न 11 बजे से सायं 5 बजे तक).** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)
Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register Email: oneday@globalpagoda.org

सूचनाः कृपया पीने के पानी की बोतल अपने साथ लायें और पगोडा परिसर में उसे भर कर अपने साथ रखें।

'धम्मालय' विश्राम गृहः एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम की सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or email- info.dhammalaya@globalpagoda.org

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्कः
info@globalpagoda.org or pr@globalpagoda.org

दोहे धर्म के

गुरुवर! तुम मिलते नहीं, धरम गंग के तीर।
तो बस गंगा पूजता, कभी न पीता नीर॥

संस्थापन हो धरम का, पाप उखड़ता जाय।
सभी काल्पनिक मान्यता, स्वतः दूर हो जाय॥

होवे ज्ञान परोक्ष तो, उलझन बढ़ती जाय।
बिन जाने ही मान्यता, सिर पर चढ़ती जाय॥

कुशल कर्म करते रहें, करें न पाप लवलेश।
मन निर्मल करते रहें, यही बुद्ध संदेश॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

गंगा जमुना न्हावतो, कीन्या च्यारूं धाम।
मन तो ब्याकुल ही रह्यो, सारा हुया निकाम॥

इमरत रस सारो बह्यो, सुद्ध धरम रो सार।
रहग्यो फूट्यो ठीकरो, हुयो सीस रो भार॥

अंधभक्ति री पुष्टि स्यूं, दूसण जग्या अनेक।
जड़ता छायी धरम पर, रहग्यो दूर विवेक॥

दंभ चढायो सीस पर, आंधो तारणहार।
लारै आंधा चेलका, ले डूब्यो मझधार॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2566, आषाढ़ पूर्णिमा, 13 जुलाई, 2022

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 01 JULY, 2022, DATE OF PUBLICATION: 13 JULY, 2022

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org